सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

एक पैसा

सड़क पर मिले जो मुझे एक पैसा,
मैं झट से उसे अपनी मुट्ठी में ले लूँ,
मैं झट से उसे अपने भाई को दे दूँ।
मैं झट से उसे अपनी माँ को दिखाऊँ।
मैं सबको चलूँ ले के मेला दिखाऊँ
मैं राजा बनूँ और हाथी पे घूमूँ,
मैं बागों में जाऊँ और फूलों को चूमूँ
मैं सेना से कह दूँ कि कर दे चढ़ाई,
मैं दुश्मन से कह दूँ कि ले मौत आई।
सड़क पर मिले जो मुझे एक पैसा।
मैं उस एक पैसे से तोता खरीदूँ,
मैं उस एक तोते को केला खिलाऊँ,
मैं उस तोते को जादू सिखाऊँ,
वो जादू दिखाए, मैं डमरू बजाऊँ,
मैं उस एक पैसे से नट को बुलाऊँ,
वो रस्सी पे नाचे, मैं ताली बजाऊँ।
मैं कह दूँ कि हर बच्चा हर दिन नहाएँ,
मैं कह दूँ कि हर बच्चा भर पेट खाएँ।
मैं कह दूँ कि हर बच्चा बस्ता उठाए,
मैं कहँ दूँ कि हर बच्चा स्कूल जाए।
सड़क पर मिले जो मुझे एक पैसा।

कोई ला के मुझे दे

कुछ रंग भरे फूल
कुछ खट्टे–मीठे फल
थोड़ी बाँसुरी की धुन
थोड़ा जमुना का जल
कोई ला के मुझे दे
एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात
कोई ला के मुझे दे।
एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी,
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी
कोई ला के मुझे दे।
एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी सी किताब
एक मीठा सा सवाल
एक नन्हा सा जवाब
कोई ला के मुझे दे।